उपसंहार

उपसंहार

स्वतंत्रता को विभाजक रेखा के रूप में स्वीकार करते हुए स्वतंत्रता के बाद की हिन्दी कहानी को स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी कह सकते हैं। स्वतंत्रता के बाद भारत के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं धार्मिक परिवेश में काफी परिवर्तन आया है। स्वतंत्रता से पूर्व परकीय सत्ता से संघर्ष और स्वतंत्रता प्राप्ति देश की प्रमुख समस्याएँ थीं। स्वतंत्रता के बाद समस्याओं ने नया रूप धारण कर लिया। जनता की आशा-आकांक्षाएँ मिट्टी में मिल गईं। सांप्रदायिक द्वेष एवं रक्तपाद से मानवता आहत हुई। इससे उत्पन्न शरणार्थी समस्या ने देश की अर्थव्यवस्था को तहस-नहस कर दिया। जनसंख्या में वृद्धि हुई। बढ़ती आर्थिक विषमताओं ने मानवीय संवेदनाओं को संकुचित कर दिया। सरकारी औद्योगिक नीतियों के फलस्वरूप कुछ घरानों में पूंजी का संग्रह बढता गया। आर्थिक असमानता बढ़ गईं। सत्ता की राजनीति एवं लूटवाली औद्योगिक व्यवस्था के परिणाम स्वरूप जातिगत एवं वर्गगत विद्वेष प्रबल हुआ। शिक्षा का प्रसार तो हुआ लेकिन शिक्षित बेकारों की संख्या बढ़ी। बढ़ती महंगाई में गांव एवं शहर की जनता का जीवन झकझोरने लगा। सामाजिक अराजकता एवं असुरक्षा की भावना बलवती हुई। विकृत राजनीति एवं चुनाव के चहल-पहल में जातिगत संघर्ष बढ़े। इन्हीं दुष्परिणामों के साथ कुछ लाभ भी हुए। शिक्षा का प्रचार-प्रसार हुआ। श्रमिक वर्ग वर्गीय हितों की ओर अग्रसर

हुए। वे शोषण एवं दमन के विरुद्ध आवाज़ उठाने का साहस करने लगे। धार्मिक अंधविश्वास, रूढ़ परंपराएँ आदि खंडित हुए।

इन तमाम परिस्थितियों के साथ स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी का विकास हुआ। स्वातंत्र्योत्तर परिवेश में हिन्दी कहानी की विकास यात्रा को व्यापक रूप कहानी आंदोलन से मिला। अनेक कृती लेखकों ने समय-समय पर कहानी को अपनी तूलिका से सजाया-संवारा। इनमें अमरकांत का नाम सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। अमरकांत ने अपनी कहानियों में औसत आदमी का जीवन उसकी खूबियों और खामियों के साथ प्रस्तुत किया है। उनकी कहानियों में मध्यवर्ग अपनी अभावजन्य पीड़ा, वैचारिक अंतर्विरोध, चारित्रिक विसंगति और नैतिक बोध की असंगतियों के साथ विद्यमान है।

स्वतंत्रता पूर्व युग में जन्मे और स्वतंत्रता के तुरंत बाद साहित्यिक क्षेत्र में उतरे अमरकांत के लिए रचना एक सामाजिक दायित्व था। उनकी कहानियों का सामाजिक आधार मध्यवर्ग है। पराधीन भारत में जनता को जिन समस्याओं का सामना करना पड़ा था, वे स्वाधीन भारत में बहुत ही जटिल बन गयीं। मध्यवर्ग तो भारतीय समाज का बहुत बडा हिस्सा है इसलिए इन समस्याओं का असर विशेषकर मध्यवर्ग पर ही पडा, मतलब वे इन समस्याओं को झेलने के लिए अभिशप्त बन गए। इसलिए उनकी कहानियों में भारतीय मध्यवर्गीय समाज के जीवन संघर्षों एवं जिजीविषाओं को आवाज़ मिली है।

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद पूरे भारत में एक प्रकार की अव्यवस्था छा गई थी। जनता ने जिस नैतिक लोकतंत्र का सपना देखा था, वह मिट्टी में मिल गया। स्वतंत्रता आंदोलन के समय जिन स्वप्नों को लेकर लोगों ने अपने प्राणों की बली चढ़ाई थी, वे अर्थहीन रह गए। लोकतंत्र के भीतर पूंजीवादी सामंतवादी शक्तियों ने भ्रष्टाचार को बढ़ावा दिया। जनता के बीच स्वप्नभंग और मोहभंग की स्थितियां उत्पन्न होने लगीं। मोहभंग ने व्यक्ति को उलझन में डाल दिया। मोहभंग की इस स्थिति ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया। नौकरी की प्रतीक्षा में खडे नवयुवक दिशाहारा होकर भटकने लगे। सख्त गरीबी में जन-जीवन पिसने लगा। इनकी गरीबी का फायदा उठानेवाले एक जनसमुदाय का उदय भी इस बीच हुआ। यह जनसमुदाय अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए हाशिएकृत समुदाय का हर प्रकार से शोषण करने लगा। तत्कालीन समाज की इन सारी समस्याओं को अमरकांत ने अपनी कहानियों आवाज़ दी है। उनकी 'बस्ती', 'डिप्टी कलक्टरी', 'बहादुर', 'नौकर', 'विजेता' आदि कहानियों में तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था की विद्रूपताओं से मुक्ति का स्वर मुखरित है।

स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज में इन सारी विद्रूपताओं को पनपने के ज़मीन तैयार करने में तत्कालीन राजनीति की बहुत बडी भूमिका थी। स्वाधीन भारत की जनता हमेशा सुव्यवस्थित शासन से वंचित रही। अधिकार के मादक सुख ने सत्ताधीशों को धनलोलुप एवं स्वार्थी बना दिया। नेताओं के बीच के गठबंधन टूट गए, अधिकार के लिए आपस में होड़ मच गई। सत्ता हडपने के लिए षड्यंत्र व्यापक हो गए। जाति, धर्म, संप्रदाय, वर्ण आदि के नाम पर जनता को भटकाने

लगे। जन चेतना को खंडित करते हुए ये अधिकारी वर्ग अपना उल्लू सीधा करने लगे। वास्तविकता यह है कि आज की राजनीति भ्रष्टाचार में आकंठ डूबी हुई है। इसकी आड़ में अधिकार प्राप्ति की नयी-नयी रणनीति तैयार हुई। वर्ग भेद एवं सांप्रदायिकता की लहरें तेज़ होती गई। चुनाव की राजनीति एवं जातिवाद ने राजनीति को अधिक ज़हरीला बना दिया। अमरकांत ने 'टिटीहरी', 'कुहासा', 'एक बाढ़ कथा', 'जाँच और बच्चे' जैसी कहानियों के माध्यम से इन समस्याओं को बुलंद करने की कोशिश की है।

आज का समाज अर्थाधिष्ठित है। अर्थकेन्द्रित व्यवस्था ने जन-जीवन की समस्याओं को अधिक जटिल एवं पेचीदा बना दिया है। धन के पीछे की होड़ ने समाज में बहुत सारी संकीर्ण समस्याओं को जन्म दिया है। फलस्वरूप मानवीय संवेदनाएं नष्ट होती जा रही है। इनसानियत का स्थान दानवीयता ने ले लिया है। सब कहीं भ्रष्टाचार फैल गया है। इन सबके बीच औसत आदमी होश संभालने के लिए तडप उठता है। उसके सामने नई-नई समस्याएँ जन्म लेने लगी हैं। स्वार्थ की इस दुनिया में आदमी के जीवन संघर्ष को अमरकांत ने नज़दीकी से पहचाना है। एक ओर एक जून की रोटी के लिए तडपनेवाली जनता है तो दूसरी ओर यशोआराम से जीनेवाला वह जनसमुदाय है जो हमेशा निरीह जनता के शोषण पर तुला हुआ है। 'दोपहर का भोजन', 'सपूत', 'पहलवानी' आदि कहानियों में इनका जिक्र हुआ है। 'हौसला', 'तूफान', 'विजेता' जैसी कहानियों के माध्यम से इस बात को सिद्ध करने का प्रयास भी अमरकांत ने किया है कि अगर नारी आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो जाय, यदि वह स्वावलंबी हो जाय तो अपने ऊपर उठनेवाले अत्याचारों का एक हद तक वह सामना कर सकती है।

देश के प्रति अमरकांत की प्रतिबद्धता इतनी गहरी है कि वे नष्ट होते हमारे सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति बहुत चिंतित है। भारतीय संस्कृति अपनी समन्वयात्मकता, एकता, सहिष्णुता आदि के लिए विख्यात थी। लेकिन समय बदलने के साथ उसमें कई बाहरी शक्तियों का हस्तक्षेप हुआ। उनमें कुछ तो भारतीय संस्कृति की अविरल धारा में समा गए। लेकिन कुछ ने तो उसको तहस-नहस करने की कोशिश की। स्वतंत्रता के बाद पूँजीवादी अर्थकेन्द्रित व्यवस्था में भारतीय संस्कृति का अपजय एवं सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास हुआ। औद्योगीकरण के फलस्वरूप आविर्भूत शहरीकरण की प्रक्रिया ने पारिवारिक जीवन को भी बुरी तरह प्रभावित किया। पारिवारिक संबन्धों में तनाव उत्पन्न होने लगी। रिश्ते शिथिल होने लगे। बुजुर्ग परिवार से विस्थापित होने लगे। गांव और शहर की संस्कृति के बीच दम घुटता आदमी एक प्रकार के विस्थापन के लिए अभिशप्त बन गया। कला और साहित्य के क्षेत्र में भी अपसंस्कृति जन्म ली जो बिल्कुल अर्थाधीष्ठित थी। 'कला प्रेमी', 'सफर', 'कुहासा', 'वह हंसी' जैसी कहानियों के ज़रिए अमरकांत भारतीय समाज को इस अपसंस्कृति के चंगुल से मुक्त करने का उपाय ढूढते हैं। उनकी कहानियाँ मार-काट एवं झीना-झपटी की दुनिया में नष्ट होती मानवीय संवेदनाओं की पुनःस्थापना की आशा करती हैं।

कथ्य पक्ष के सामान अमरकांत की कहानियों का शिल्प पक्ष भी निराला है। उनकी अधिकांश कहानियों के पात्र काल्पनिक या उनके द्वारा निर्मित नहीं है। वे उनकी ज़िंदगी की संवेदनाओं के साथ जुडे हुए हैं। कुछ तो उनके अपने हैं, कुछ तो ज़िंदगी के प्रत्येक मोड़ में मेहमानों की तरह आ मिले हैं। 'ज़िंदगी और जोक' का रजुआ, 'डिप्टी कलक्टरी' का नारायण आदि ऐसे पात्र हैं। भाषा तो अभिव्यक्ति

का नियामक तत्व है। अमरकांत ने सहज, सरल भाषा में गंभीर व्यंजनाएँ की है। मुहावरे, लोकोक्ति, प्रतीकों से उसको सजाया-संवारा है। वे भिन्न-भिन्न शैली में सर्जना करने की लिहाज रखनेवाले हैं।

वस्तुतः कह सकते हैं कि अमरकांत स्वातंत्र्योत्तर कहानी के कर्णधारों में प्रमुख है। उनकी कहानियाँ स्वातंत्र्योत्तर भारतीय ज़िंदगी का नंगा चित्र खींचती हैं। पराधीनता से मुक्ति की सूचना मिलते ही भारत की जनता ज़िंदगी के मोहक सपने में डूबी हुई थी। स्वाधीनता उनके लिए गुलामीपन से मुक्ति ही नहीं बल्कि नयी ज़िंदगी की शुरुआत थी। लेकिन स्वतंत्रता मिलते ही उनके सपनों पर तुषारपात हुआ। स्वाधीन भारत की नई सरकार ने जनता को जो वादे दिए थे, वे वादे मात्र रह गए। स्वाधीन भारत की युवा पीढ़ी ने अपने चारों ओर भ्रष्टाचार, घूसखोरी, चोरबाज़ारी, सुख-सुविधाओं का अभाव, राजनैतिक अनैतिकता, स्वार्थ संक्षेप में जीवन की सारी विद्रूपताओं को देखा, जिसका अमरकांत भुक्तभोगी है। इसलिए उनकी रचनाओं में इन सारी समस्याओं को आवाज़ मिली है और ये समस्याएं कहीं न कहीं आज भी समाज में मौजूद हैं। अमरकांत इसको पहचानते हैं इस पर अपना आक्रोश प्रकट करते हैं तथा एक स्वस्थ समाज की स्थापना की आशा भी करते हैं। संघर्ष के इस ज़माने में साहस के साथ संघर्ष करते हुए ज़िंदगी को आगे बढ़ाने का संदेश भी वे अपनी कहानियों के ज़रिए देते हैं। इतना ही नहीं उनकी रचनाएँ आगे भी शोध के लिए विभिन्न आयामों को खोल देती हैं।